महाराणा प्रताप का जन्म स्थानः पागड़ा पोल के पास स्थित झालिया-का-मालिया अथवा रानी झाली का महल महाराणा प्रताप का जन्म स्थान माना जाता है। यह भवन अनगढ़ पत्थरों से निर्मित है। इसकी दीवारें चित्रित थी जिसके अंश अभी भी देखे जा सकते हैं।

महाराणा कुम्भा

हिन्दू सुरताण उपाधि से प्रसिद्ध महाराणा कुम्भकर्ण, गुहिल राजा मोकला के पुत्र थे, उनकी माता का नाम सौभाग्य देवी तथा पुत्र का नाम उदयकरण था। ये 1433 ई. में मेवाड़ के शासक बने तथा 1468 ई. तक लगभग 30 सालों तक शासन किया।1437 ई. में मालवा के सुल्तान महमुद खिलजी से सारंगपुर का युद्ध हुआ, जिसमें कुम्भा ने भागती मुस्लिम सेना का माडूं तक पीछा कर सुल्तान को बन्दी बना लिया। इसके उपरान्त कुम्भा ने गुजरात के शासक कुतुबुदीन एवं नागौर के शम्स खान की संयुक्त सेना को हराया था। कहा जाता है कि मेवाड़ में स्थित 84 दुर्गो में से 32 दुर्गो का निर्माण कुम्भा ने करवाया था। चित्तौड़ के प्रसिद्ध विजय स्तम्भ का निर्माण भी कुम्भा ने ही 1458-68 ई. में करवाया था। इनके शासनकाल की जानकारी 'एकलिंग महात्मय', 'रसिकप्रिया' तथा 'कुम्भलगढ़ प्रशस्ति' से मिलती है। उनके शासन काल को मेवाड़ का स्वर्णयुग कहा जाता है।

दुर्ग की जल संचय सरंचनाएँ

दुर्ग में वर्षाजल के संचय के लिए कई बाँध एवं बावड़ियाँ बनी हुई है। दुर्ग का सबसे ऊचाँ एंव लम्बा बाँध बड़वा तालाब कहलाता है। इसके अलावा छिपोला तालाब, फुटिया बाँध, छुबेला तालाब, राणा बावड़ी, बादशाही बावड़ी एवं लंगन बावड़ी प्रमुख है। लंघन बावड़ी से जल की आपूर्ति केवल महल को ही होती थी। कहा जाता है कि भीषण सूखे में भी इस बावड़ी में जल की सत्त आवक बनी रहती थी ।

कुम्भलगढ़ किले के पास स्थित स्मारकः

1 जैन मंदिर रणकपुर : पाली जिले में स्थित, कुम्भलगढ़ से 35 किमी दूर 1444 समान नक्कासीदार स्तंम्भो के लिए प्रसिद्ध।

2. मण्डप व तोरणयुक्त घाट, नव चौकी, राजसमन्द : राजप्रशस्ति शिलालेख के लिए प्रसिद्ध ।

3. चेतक समाधि : बलीचा स्थित यह समाधि महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक की है।

4. बादशाही बाग : खमनौर हल्दीघाटी की लड़ाई से संबधित स्थल।

5. हल्दी घाटी, खमनौर : महाराणा प्रताप और मुगल सेना के सेनापति मानसिंह के बीच ऐतिहासिक लड़ाई के लिए प्रसिद्ध ।

6. रक्त तलाई, खमनौर : खून खराबे का तालाब जो कि हल्दीघाटी की भयंकर लड़ाई की याद दिलाता है ।

स्मारक की अतिरिक्त सूचना :

स्थानः किला कुंभलगढ़, तहसील-केलवाड़ा, जिला-राजसमंद
अधिसूचना संख्या : 1951 के अधिनियम संख्या LXXI, दिनांक 28-11-1951
पहुँचः-निकटतम हवाई अड्डा : उदयपुर, निकटतम रेलवे स्टेशनः कांकरोली, निकटतम बस स्टेशन : केलवाड़ा।
आसपास के पर्यटक स्थल : लाखोलाव तालाब और नवचौकी वाला घाट, राजसमंद।
सुविधाएं : शौचालय, पेयजल, प्रकाशन काउंटर, टिकट काउंटर, लाइट एंड साउंड शो (संचालन RTDC) और बेबी फीडिंग रूम आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं।
स्मारक में प्रवेश का समयः प्रति-दिन सूर्योदय से सूर्यास्त
भारतीय नागरिकः₹ 40/-
बिम्सटेक एवं सार्क नागरिकः ₹ 40/-
विदेशी नागरिक :₹ 600/-
15 वर्ष एवं उससे कम आयु के बच्चों के लिए :निःशुल्क
गैर व्यवसायिक उपयोग हेतु (हेंडी केमरा)
विडियो चित्रीकरण :₹ 25/-
गैर व्यवसायिक फोटोग्राफी बिना त्रिपाद (Tripod) : निःशुल्क
विश्वदाय स्मारक में चल चित्रिकरण (फिल्मिंग), डॉक्युमेंट्री तथा कामर्शियल फोटोग्राफी (Script, Costume, cast, Tripode आदि में से किसी एक का भी प्रयोग) के लिए शुल्क ₹ 100000/- प्रति-दिन एवं सुरक्षा राशि ₹ 50000/-
स्मारक में चलचित्रण (फिल्मिंग),डॉक्युमेंट्री तथा कामर्शियल फोटोग्राफी के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वेबसाइट www.asi.nic.in पर विजिट कर परमिशन विंडो पर क्लिक कर आवेदन किया जा सकता है। जानकारी के लिए जोधपुर मंडल की वेबसाइट www.asijodhpurcircle.in का अवलोकन कर सकते हैं ।

अपील : इस गौरवमयी स्मारक की समुचित सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु आने वाले सभी पर्यटकों तथा नागरिकों से सहयोग अपेक्षित है निवेदन है कि :

1. दुर्ग की रक्षा प्राचीर पर न चलें ।
2. दुर्ग में अवस्थित एतिहासिक संरचनाओं की दीवारों पर कुछ न लिखें एवं न ही कुछ उकेरें।
3. दुर्ग में कूड़ा– करकट या अन्य अपशिष्ट न फेंके।
4. देश की धरोहरों का संरक्षण हम सबका नैतिक दायित्व है, इसे आगामी पीढ़ी के लिए सहेजें ।

अवधारणा एवं निर्देशन : डॉ. बीरी सिंह, अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
आलेख प्रस्तुतीकरण : रामनिवास मेघवाल, सहायक पुरातत्त्वविद्

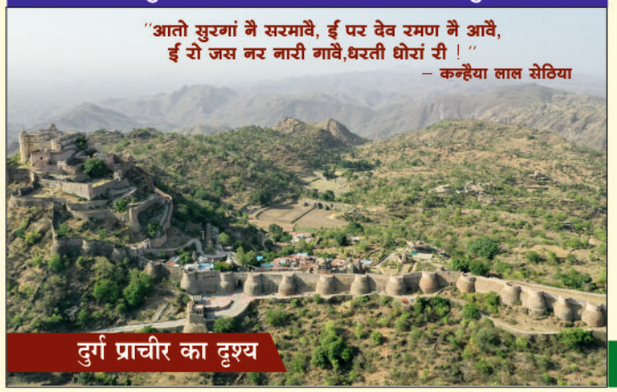

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

कुम्भलगढ़ दुर्ग
केन्द्रीय संरक्षित एवं विश्वदाय स्मारक

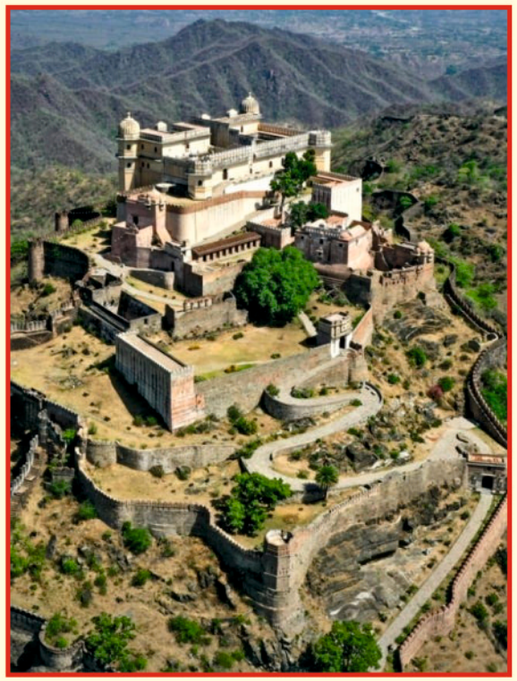

कुम्भलगढ़ दुर्ग का विहंगम दृश्य

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
जोधपुर मण्डल, जोधपुर
सम्पर्क सूत्र : 0291–2750029, 2750032

(2025)

हमारी विरासत.....हमारा गौरव

कुम्भलगढ़ दुर्ग

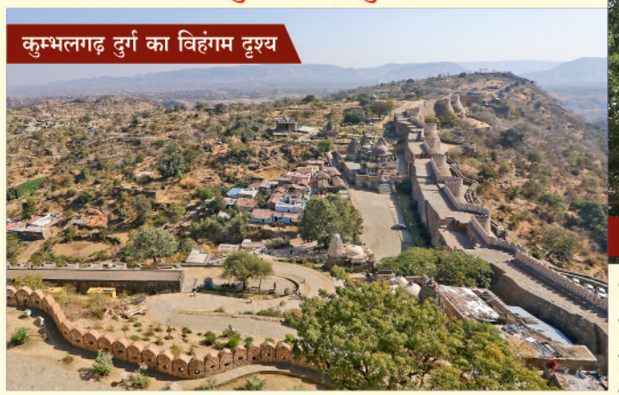
कुम्भलगढ़ दुर्ग का विहंगम दृश्य

अरावली की ऊँची पहाड़ी पर स्थित यह दुर्ग उदयपुर से 80 किमी उत्तर पश्चिम तथा जिला मुख्यालय राजसमन्द से 48 किमी पश्चिम में स्थित है। प्राचीन काल में यह क्षेत्र मेवाड़ राज्य का एक परगना था जो कि केलवाड़ा स्थित हाकिम के अधीन था। सन् 490 ई. के सादड़ी एवं चित्तौड़ के समीप नगरी अभिलेखों के अनुसार माध्यमिका क्षेत्र, दिशपुर राज्य का अंग था, जो गुप्तों के अधीन था। यह माना जाता है कि मौर्य सम्राट अशोक के पौत्र संम्प्रति ने इस दुर्ग का निर्माण करवाया था। 7-8 वीं सदी में इस क्षेत्र पर स्थानीय मोरी वंश का अधिपत्य हुआ, चित्रांगद मोरी इस वंश का संस्थापक था, जिसने चित्तौड़ दुर्ग का निर्माण करवाया था। कालांतर में गुहिल राजवंश में मोकला के पुत्र महाराणा कुम्भा ने इस दुर्ग का पुनर्निर्माण 1438. 1458 ई. के मध्य करवाया। गारे से निर्मित इस दुर्ग की दीवार इतनी चौड़ी है कि एक साथ सात घुड़सवार अलग-अलग पंक्तियों में चल सकते हैं। माना जाता है कि दुर्ग की दीवार 33 किमी लम्बी है, किन्तु यथार्थ में इस किले की लम्बाई लगभग 14 किमी है। मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासको ने इस दुर्ग को जीतने का प्रयास किया, किन्तु दुर्ग की मजबुत किलेबन्दी एवं सामरिक स्थिति के कारण सफल नही हो पाए ।

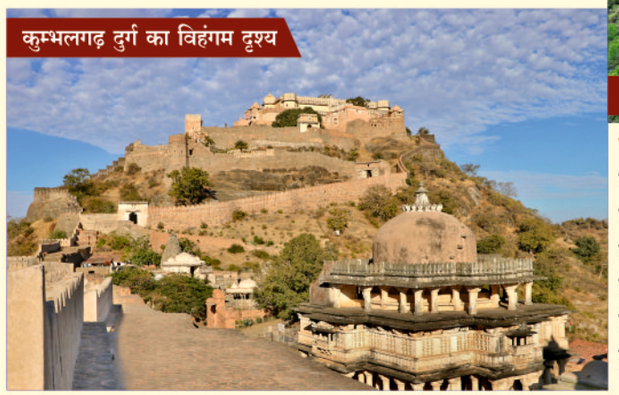
कुम्भलगढ़ दुर्ग का विहंगम दृश्य

गणेश मन्दिर

गणेश मंदिर: महाराणा कुम्भा के शासन काल में निर्मित यह मंदिर बादल महल की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित है। चित्तौड़गढ़ कीर्ति स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार राणा कुम्भा ने इस मंदिर में गणेश प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी।

वेदी मन्दिर

वेदी मंदिर : इसका निर्माण महाराणा कुम्भा ने दुर्ग निर्माण पूरा होने पर यज्ञ हेतु 1457 ई॰ में करवाया था। ऊँची जगती पर बनी यह दो मंजिली पश्चिमाभिमुख संरचना अष्ट कोणीय योजना पर निर्मित है।इसकी गुम्बदनुमा छत छत्तीस स्तम्भों पर टिकी हैं। परिसर में देवी को समर्पित तीन अन्य मंदिर भी हैं।

नीलकंठ महादेव मन्दिर

नीलकंठ महादेव मंदिर: वेदी मंदिर के पूर्व की ओर ऊँची जगती पर निर्मित इस शिव मंदिर का निर्माण 1458 ई॰ में महाराणा कुम्भा ने करवाया था। इसमें प्रवेश के लिए पश्चिम की ओर सोपान बने हैं। गर्भगृह के चारों ओर चौबीस स्तम्भों वाला खुला मण्डप है। पश्चिमी द्वार के बायीं ओर एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख से पता चलता है कि राणा सांगा ने इस मंदिर का पुनरूद्धार करवाया था।

पार्श्वनाथ मन्दिर

पार्श्वनाथ मंदिर : इस मंदिर का निर्माण 1451 ई॰ में नरसिंह पोखड़ ने करवाया था। गर्भगृह में पाश्वनार्थ की मूर्ति स्थापित है। जिसके दोनों ओर लाल पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ हैं।

बावन देवरी मन्दिर

बावन देवरी मंदिर : इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बावन (52) मंदिरों के आधार पर पड़ा जिनका एक मात्र प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। अपेक्षाकृत बड़े मंदिर में एक गर्भगृह, अन्तराल व खुला मण्डप हैं।गर्भगृह के ललाटबिम्ब पर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित है किन्तु छोटे मंदिर मूर्तिविहीन हैं।

पितलिया देव मन्दिर

पितलिया देव मंदिर :पश्चिमी भाग में स्थित इस मंदिर का निर्माण पितलिया जैन सेठ ने 1455 ई॰ में करवाया था। भू-विन्यास की दृष्टि से यह गर्भगृह एवं बहु स्तम्भीय सभा मण्डप युक्त है।गर्भगृह में चारों ओर से एवं सभा मण्डप में तीन ओर से प्रवेश किया जा सकता है। बाह्य जंघा अप्सराओं एवं नर्तकियों के अतिरिक्त देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित हैं।

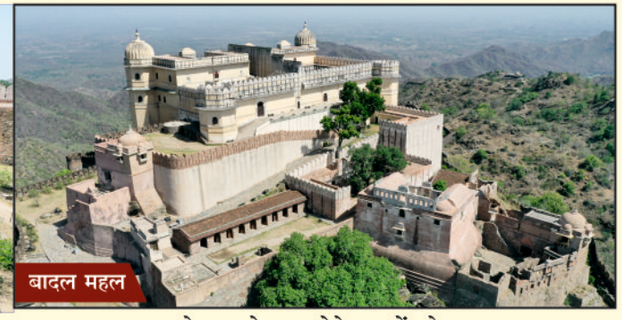
बादल महल

बादल महल: अनेक बड़े व छोटे कक्षों से युक्त जनाना व मर्दाना महल के नाम से दो भागों में विभक्त इस दुमंजिले भवन का निर्माण राणा फतेह सिंह (1885-1930) ने करवाया था। जनाना महल के बरामदे व खिड़कियाँ जाली युक्त है ताकि महल की रानियाँ बिना दिखे वहां होने वाले कार्यक्रमों को देख सकें। महल की दीवारें एवं छत चित्रकारी से अलंकृत हैं।

मामादेव मन्दिर

मामादेव मंदिर : इसे कुम्भ श्याम के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर की छत सपाट है एवं मण्डप स्तम्भ युक्त है। देवी देवताओं की अनेक आकर्षक मूर्तियॉ यहॉ से प्राप्त हुई हैं।

गोलेराव मंदिर समूह : यह बावन देवरी मंदिर से उत्तर-पश्चिम की ओर एक ऊँची पहाड़ी पर निर्मित नौ मंदिरों का समूह है। मंदिर की बाह्य भित्ति पर त्रिदेव का उत्कीर्णन अत्यन्त कलात्मक है। मंदिर की स्थापत्य जन्य विशेषताएं इसे महाराणा कुम्भा कालीन निर्माण होने को इंगित करती हैं।

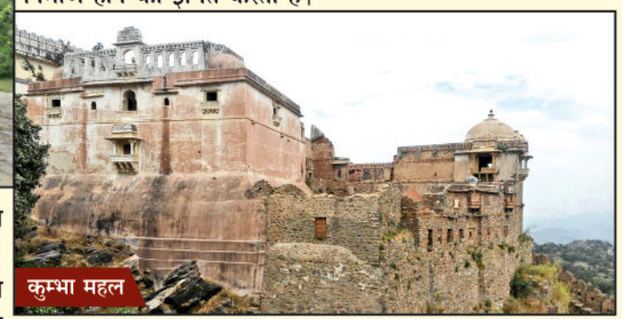
कुम्भा महल

कुम्भा महल : पागड़ा पोल के पास स्थित यह महल दुमंजिला भवन है। महल में दो कक्ष, एक बरामदा व सामने की ओर खुला प्रांगण है। कक्ष में नक्काशीदार पत्थरों से निर्मित जालीदार खिड़कियाँ हैं।